युवाओं के हाथ में तर्कांध नहीं कलम होनी चाहिये: सिद्धार्थ नागर

पवन प्रवाह
www.pawanprawah.com
e-mail-pawanprawah@gmail.com

लेखक डॉ- भरत राज सिंह
एक्यूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

कुम्भ महोत्सव पर वैज्ञानिक शोध

हम पूर्व अंक-6 (छः) अंको मे ग्लोबल-वार्मिंग का प्रभाव, वैश्विक-तापमान की बढ़ोत्तरी, कैलिफोर्निया में लगी जंगलो की आग के कारणो को जाना। अब इस अंक हम विश्व के सबसे बड़े कुम्भ महोत्सव के बारे मे जानकारी प्राप्त करेंगे तथा इसके वैज्ञानिक कारणो को जानने हेतु एस.एम.एस. द्वारा गठित समूह के निष्कर्स की प्रतीक्षा करेंगे।

भाग-01

गतांक से आगे

कुम्भ महोत्सव

यह कुम्भ महोत्सव पौष मास की पूर्णिमा से प्रारंभ होता है और प्रत्येक चौथे वर्ष नासिक, इलाहाबाद, उज्जैन, और हरिद्वार में बारी-बारी से मनाया जाता है जिसमे प्रयाग का विशेष महत्व रखता है। क्योंकि यह 12 वर्षों के बाद गंगा, यमुना एवं सरस्वती के संगम पर आयोजित किया जाता है। हरिद्वार में कुम्भ गंगा के तट पर और नासिक में गोदावरी के तट पर आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर नदियों के किनारे भव्य मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें बड़ी संख्या में तीर्थ यात्री आते हैं।

प्रयाग कुम्भ

यह कुम्भ अन्य कुम्भों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रकाश की ओर ले जाता है. यह ऐसा स्थान है जहां बुद्धिमत्ता का प्रतीक सूर्य का उदय होता है. इस स्थान को ब्रह्माण्ड का उद्गम और पृथ्वी का केंद्र माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि ब्रह्माण्ड की रचना से पहले ब्रम्हाजी ने यहीं अश्वमेघ यज्ञ किया था। दशवमेघ घाट और ब्रम्हेश्वर मंदिर इस यज्ञ के प्रतीक स्वरुप अभी भी यहां मौजूद हैं। इस यज्ञ के कारण भी कुम्भ का विशेष महत्व है। कुम्भ और प्रयाग एक दूसरे के पर्यायवाची है।

कुम्भ मेला की उत्पत्ति (सौर्यिक विधान)

कुम्भ भारतीय संस्कृति का पुरातन महापर्व है। धार्मिक विश्वास है कि मकर राशि पर सूर्य के संचार के समय समस्त तीर्थ एवं सभी देवता प्रयाग के त्रिवेणी संगम पर समाहित होते हैं (नारद पुराण 2/63/7)। अथर्ववेद में कुम्भ उस समय को कहते हैं, जो आकाश में ग्रह राशि आदि के योग से होता है।

प्रयाग के माघ मेला या कुम्भ मेला की उत्पत्ति से सम्बन्धित सौर्यिक विधान का उल्लेख वेदों एवं पुराणों में कई स्थानों पर प्राप्त होता है। अथर्ववेद में उल्लेख है कि जब मकर राशि में सूर्य का प्रवेश होता है और वृष राशि में बृहस्पति का प्रवेश होता है तब प्रयाग में दुर्लभ कुंभ का योग होता है-

मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्थती।
कुंभयोगो भवेतत्र प्रयागेहयाति दुर्लभं।
(अथर्ववेद, 19/53/3)।

कुम्भ पर्व प्रतिवर्ष माघ मास में होता है, जब सूर्य एवं चन्द्रमा मकर राशिस्थ होते हैं। परन्तु 12 वर्ष में बृहस्पति के क्रान्तिवृत्तीय परिक्रमण के पश्चात् 13वें वर्ष में पुनः मेष राशि में आने पर तथा चन्द्र एवं सूर्य के मकर राशि में होने पर प्रयाग में कुम्भ महापर्व का योग माना जाता है।

मेष राशिगते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ।
अमावस्यो तदा योगः कुम्भाख्यस्तीर्थ नायके।।
(केएम 17, केएम 8)।

भारतवर्ष में कुम्भ का पावन पर्व का योग प्रयाग के अतिरिक्त गंगा नदी पर हरिद्वार में, गोदावरी नदी पर नासिक में और शिप्रा नदी पर उज्जैन में बनता है। इन चारों तीर्थों में क्रमशः बारहवें वर्ष के पश्चात 'कुम्भ पर्व' होता है, जैसा कि निम्न श्लोक से स्पष्ट है-

गंगा द्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे।
कुम्भाख्योयस्तु योगोडयं प्रोच्यते शंकरादिभि।।

अर्थात गंगाद्वार(हरिद्वार), प्रयाग, धारानगरी(उज्जैन) और गोदावरी (नासिक) में शंकरादि देवगण ने कुम्भ योग बताया है।

कुंभ मेले का ज्योतिषीय महत्व

ज्योतिषियों के अनुसार कुंभ का असाधारण महत्व बृहस्पति के कुंभ राशि में प्रवेश तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के साथ जुड़ा है। ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से बहती गंगा के किनारे पर स्थित हर की पौड़ी स्थान पर गंगा जल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है। यही कारण है कि अपनी अंतरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से अर्ध कुंभ के काल मे ग्रहों की स्थिति एकाग्रता तथा ध्यान साधना के लिए उत्कृष्ट होती है। हालांकि सभी हिंदू त्योहार समान श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाए जाते है, पर यहाँ अर्ध कुंभ तथा कुंभ मेले के लिए आने वाले पर्यटकों की संख्या सबसे अधिक होती है।

ग्रह नक्षत्रों के कुम्भ राशि में विचरण के अनुसार, हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन में सदियों से हर तीसरे वर्ष अर्ध या पूर्ण कुम्भ का आयोजन किया जाता है। यह मूल रूप में बृहस्पति और सूर्य ग्रह की स्थिति के आधार पर विभिन्न स्थानों पर मनाया जाता है।

हरिद्वार : गुरु कुम्भ राशि पर और सूर्य मेष राशि पर हो, तब हरिद्वार में कुम्भ मेला मनाया जाता है।

वैचारिक कुम्भ

कुम्भ महोत्सव पर वैज्ञानिक शोध टीम का गठन

इस वर्ष 2019 में प्रयाग में 'कुम्भ महोत्सव' के वैज्ञानिक पहलू पर, एस0एम0एस0 के वैदिक विज्ञान केन्द्र के तहत शोध हेतु शिक्षकों व विद्यार्थियों की एक टीम गठित की गयी है, जिसका मुख्य उद्देश्य करोड़ों लोगों के एक अनोखे-समागम, जो आस्था, विश्वास, भक्ति व आध्यात्म के कारणों से होता है, के वैज्ञानिक पक्ष की जानकारी प्राप्त करना है। वरिष्ठ पर्यावरणविद, वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष व एस0एम0एस0 के महानिदेशक-प्रो0 भरत राज सिंह का कहना है कि लोगों की इस आस्था, विश्वास, भक्ति व आध्यात्म के पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक कारण अवश्य छिपा है, जिसमें ब्रह्ममांड के पिंडो की गति व उनके आकर्षण के प्रभाव तथा सूर्य के उत्तरायण होने के संक्रमण के कारण अवश्य ही धरती के चिंतक प्राणियों अर्थात मनुष्यों में कोई न कोई सोच में खिचाव होता है, जिससे उनमें आस्था व विश्वास जगता है और वे यहां इतनी बड़ी संख्या में 'त्रिवेणी संगम' पर स्नान के लिये एकत्रित होते है। उनका यह मानना है कि जब पृथ्वी पर उपलब्ध समुद्री सतह के नजदीक चंद्रमा दिन-रात के 24 घंटे में एक बार गुजरती है, तो ज्वार-भाटा आता है तथा पृथ्वी से जब राकेट चंद्रमा या अन्य ग्रहों पर भेजे जाते है, तो पृथ्वी की कक्षा से उस ग्रह के कक्षा में प्रवेश के समय बूस्टर का उपयोग करते है, जिससे वह संक्रमण की स्थिति से बाहर निकल सके। प्रश्न उठता है कि क्या कोई स्थिति तो सूर्य के उत्तरायण के मकरसंक्रमण से उत्पन्न होती है, जिससे सम-वैचारिक लोगों का समागम त्रिवेणी स्थल पर होने के लिये उन्हें प्रेरित करता हो और वे वहाँ पहुंच कर इस अलौकिक समागम के भागीदार बनते है और स्नान आदि के साथ प्रवचनों आदि का लाभ प्राप्त करते हो?

संस्था के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री शरद सिंह जी का कहना है कि उनके संस्थान में वर्ष 2010 से शोध कार्य पर विशेष बल दिया जा रहा है और आज संस्थान 'डॉ0 अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय' के 'नवाचार, नव-पर्यवर्तन तथा स्टार्टअप' में 'प्रथम-स्थान' पर है। हम अपेक्षा करते है कि उपरोक्त शोध कार्य हेतु मा0 कुलपति, प्रो0 विनय पाठक जी तथा मा0 मंत्री, (तकनीकी व चिकित्सा शिक्षा) श्री आशुतोष टण्डन जी इस अभूत-पूर्व शोध कार्य पर अपनी सहमति देकर, अन्य कालेजों को भी जुड़ने का निर्देश देगें, जिससे यह विश्वविद्यालय किसी तव्यात्मक वैज्ञानिक-कारणों की जानकारी हासिल कर विश्व में यह एक नवीन दिशा दे सके तथा आस्था के इस महान कुम्भ पर्व का वैज्ञानिक पहलू को प्रकाशित कर कीर्तिमान स्थापित कर सके।

प्रयाग (इलाहाबाद): जब सूर्य एवं चन्द्र मकर राशि में होते हैं तथा मेष या वृषभ राशि में बृहस्पति तब प्रयाग में कुम्भ मेला आयोजित होता है।

उज्जैन: सूर्य तुला राशि पर स्थित हो और गुरु वृश्चिक राशि पर तब कुम्भ मेला उज्जैन में मनाया जाता है।

नासिक (त्र्यंबकेश्वर): जब गुरु सिंह राशि पर स्थित हो तथा सूर्य एवं चंद्र कर्क राशि पर हो, तब नासिक में कुम्भ मेला आयोजित किया जाता है।

वैचारिक कुम्भ

इस वर्ष शासन ने पांच जिलों में पर्यटन विभाग की ओर से वैचारिक कुम्भ का आयोजन लखनऊ, वाराणसी, प्रयाग, वृंदावन (मथुरा), अयोध्या में कराया तथा हर जिले में होने वाले वैचारिक कुम्भ की थीम अलग-अलग रखी गई थी, जैसे:- लखनऊ में युवा शक्ति की कुम्भ में भूमिका, वाराणसी में सर्व समावेशी भारतीय चिंतन, प्रयाग में पर्यावरण, वृंदावन में मातृ शक्ति सामाजिक चिंतन, और अयोध्या में समरसता पर थीम रखी गई थी। इस वैचारिक गोष्ठी में वैज्ञानिक, सनातन धर्म के संतों के साथ सभी धर्मों के धर्माचार्य, समाजसेवी और तमाम संगठनों के लोग भाग लेने के लिये प्रेरित किये गये थे। वैचारिक कुम्भ कराने का उद्देश्य था कि कुम्भ से जुड़े वैज्ञानिक, धार्मिक और सामाजिक पहलुओं के बारे में लोगों को जागरूक किया जाए जिससे अधिक से अधिक लोग इससे जुड़ें और कुछ नया विचार निकल सके। इसका आयोजन अक्टूबर -नवम्बर 2018 मे किया गया था। इस वैचारिक गोष्ठी से क्या निष्कर्स निकला, सम्भवतः शासन इसे कुम्भ महोत्सव के समाप्ति कई बाद विचार-विमर्ष हेतु घोषित करे।

मकर-संक्रांति से चल रहे कुम्भ महोत्सव की एक झलक

प्रयागराज मे संगम तीरे आस्था, भक्ति और अध्यात्म का अदभुत संसार बस चुका है। लोगो को उस पल का इंतजार रहता है, जब वे शाही स्नान के वे साक्षी बनें। लघु भारत को अपने में समेटे कुंभ क्षेत्र में अखाड़ों में अध्यात्म की बयार बह रही है तो कथावाचकों के पंडाल से रामधुन। कहीं कृष्ण-राधा के प्रेम का बखान हो रहा है। हनुमान की रामभक्ति की चर्चा है तो कहीं एक ब्रह्म की। सभी की अपनी भक्ति और सभी के अपने इष्ट। जा की रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी। सद्भाव और समरसता का संगम हर आश्रम में शाश्वत सत्य की तरह विराजमान है। त्रिमम्बक की दोनों शिखाओं गंगा और यमुना को लांघ बढ़ने पर शंख द्वार के सामने से चारों ओर जहां तक दृष्टि जाती है।

आश्रम और आश्रय स्थलों की पंक्तियां दूर-दूर तक दिखाई दे रही हैं। अखाड़े, महामंडलेश्वर, महंत और कथावाचकों के विशाल पंडाल सजकर तैयार हैं। शायद ही कोई राज्य होगा और शायद ही कोई जिला अपवाद होगा, जहां का संत और गृहस्थ यहां मौजूद न हो। क्षेत्र भर में हरि अनंत, हरि कथा अनंता.. चरितार्थ हो रहा है। तप और जप के माध्यम से परमात्मा तक पहुंचने का प्रयास करने वालों की भी कमी नहीं है। ध्यान, हठ योग, क्रिया योग और सहज ध्यान योग आदि से अंतःकरण को शुद्ध करने का यह मार्ग उनके गुरु ने सिखाया है।

कुरीतियों और आडंबर से खुद को मुक्त करने का संदेश देने के लिए भी कई संत प्रयासरत हैं। ग्रहों की दशा बता सचेत करने वाले और तंत्र-मंत्र और गंडा-ताबीज से सुख-शांति देने का दावा करने वाले भी अनेक हैं। दिव्यांग जन को कृत्रिम अंग बांटने वाले भी अपने सेवा कार्य के साथ मौजूद हैं। सबका अपना-अपना दर्शन, अपना-अपना सेवा कार्य। कुछ के पास पर्ण सुसज्जित कॉटेज हैं तो कुछ के पास पर्ण कुटि तो अनेक सिर्फ नीली छतरी के भरोसे। लेकिन किसी को शिकायत नहीं। सिर्फ प्रतीक्षा है पुत्र शनि के घर के द्वार खोल पिता सूर्य के उदित होने की, ताकि ग्रहण कर सके संगम का पुण्य प्रताप।

अगला अंक 8 भी अवश्य पढ़ें ...

पवन प्रवाह
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
website: www.pawanprawah.com
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक